डिजिटल दैनिक

साहित्य 24

www.sahitya24.com

राष्ट्रीय संस्करण

साहित्य कला और संस्कृति को समर्पित एक डिजिटल अभियान

वर्ष-05, अंक-31 | पृष्ठ-4 | डिजिटल अंक-31 | गुरूवार, 10 सितंबर, 2026 | संपादक हरिप्रकाश पाण्डेय | मूल्य 0, नि:शुल्क

BHAGAT HOSPITALS PVT. LTD.

BHAGAT HOSPITALS
2/48-49, Janak Puri, New Delhi-110058
Tel. No.:011-45102030

BHAGAT CHANDRA HOSPITALS
RZF-1/1, Mahavir Enclave, Near Palam-Dwarka Flyover, New Delhi-110045
Tel. No.:011-45254523/24/25

BHAGAT HOSPITAL Works Wonders

E-mail : info@bhagathospital.com, website : bhagathospital.com *NABH accreditation for both the hospitals

Delhi's Premier Family Health Care Facility with Professionally Managed Medical Staff Contact No. 9811279079

A NABH Accredited Hospital

भावना का प्रणयन है - भरत के राम

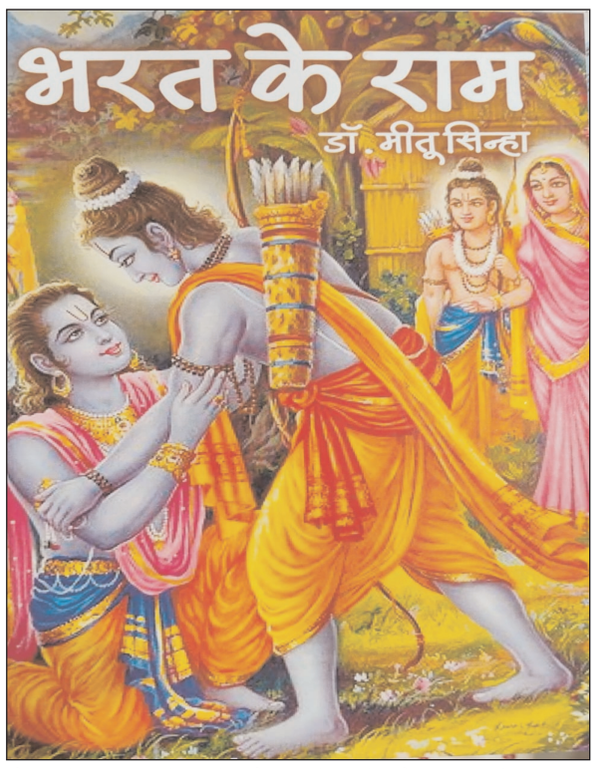

भारत के राम डॉ मीतू सिन्हा द्वारा रचित वह कृति है जिसका आधार भक्ति और भावना है। यह एक प्रबंध काव्य है जो श्री राम और श्री भारत के प्रेम भाव पर आधारित है। डॉ मीतू की इस 13वीं पुस्तक जो कि एक प्रबंध काव्य है, का प्रकाशन के०ए०ग्रुप ऑफ पब्लिकेशन के द्वारा किया गया है। यह काव्य कथा भारत जी के अयोध्या आगमन से आरंभ होती है। भरत हर किसी से श्री राम को वापस लाने का आग्रह करते हैं और स्वयं पूरी अयोध्या को जुटाकर चित्रकूट के लिए निकल पड़ते हैं। क्योंकि श्री राम वन पथ पर पैदल चले हैं इसलिए भारत भी पैदल ही चलने का निर्णय लेते हैं उनके भाव में मार्ग में पढ़ने वाले सभी राज्य और आश्रम प्रवाहित हो जाते हैं।

वैसे तो श्री भरत की भक्ति भावना और प्रेम का शब्दों में वर्णन करना कठिन है परंतु लेखिका ने इस कठिन प्रयास को बड़ी ही सहजता से सरल भाषा में सरल शब्दों में उकेरा है। यह पूरा काव्य ही प्रेममय है। निषाद और लक्ष्मण की शंका में भी प्रेम है, महर्षि भारद्वाज की दूर दृष्टि में भी प्रेम है और कैकई के पश्चाताप में भी प्रेम है। यह कथा राम को भरतमय और भरत को राममय बनाने की कथा है। दोनों के मन में एक दूसरे के प्रति इतना प्रेम है कि वह एक दूसरे के कष्टों और दुर्भाग्य को अंगीकार करने के लिए भी सज्ज हैं।

भरत की चित्रकूट यात्रा, श्री राम को पाने की यात्रा है, ब्रह्म को पाने की यात्रा है, जो एक मनुष्य को परब्रह्म के समक्ष लाकर खड़ा कर देती है, जहां राम अपने अवतार तत्व को भूलकर भावना और प्रेम की धारा में प्रवाहित हो जाते हैं। भरत के प्रेम का प्रवाह इतना तीव्र है कि उसमें ज्ञानियों का ज्ञान और बैरागियों का वैराग्य भी प्रवाहित हो जाता है। उनकी भावनाओं का वेग ज्ञान की सारी गरिमा को बहा कर ले जाता है। शेष बचती है तो मात्र लेकर अनुभूति, यही अनुभूति एक भक्त के जीवन की सारी अर्जित संपत्ति है।

लेखिका ने अपनी लेखनी से इन अवर्णनीय भावों का बहुत ही सटीकता से वर्णन किया है, भारत अपना प्रेम प्रदर्शित करते हुए कहते हैं - मेरी संपत्ति है भैया के चरण,
इनका दर्शन चाहता हूं मैं।
मैं प्रेमी हूं इन युगल चरणों का,
इनसे ही प्रेम निबाहता हूं मैं।।

इस अवर्णनीय प्रेम का वर्णन करने का जो साहस लेखिका ने दिखाया है वह निश्चय ही काबिले तारीफ है, साधुवाद के योग्य है। निश्चित रूप से यह पुस्तक हृदय से पढ़ने मनन करने और चिंतन करने के योग्य है।

हरिप्रकाश पाण्डेय,साहित्य24

हिंदी साहित्य की दशा एवं दिशा

हिंदी साहित्य भारतीय समाज की संवेदना, संघर्ष, संस्कृति और जीवन-मूल्यों का जीवंत दस्तावेज रहा है। यह केवल शब्दों की रचना नहीं, बल्कि समय की धड़कनों को पहचान ने और उन्हें अभिव्यक्ति देने की सशक्त परंपरा है। आदिकाल से लेकर भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल तक हिंदी साहित्य ने निरंतर बदलते सामाजिक परिवेश के साथ स्वयं को विकसित किया है। आज जब दुनिया तकनीक, बाजारवाद और तीव्र संचार के दौर से गुजर रही है, तब हिंदी साहित्य भी एक महत्वपूर्ण संक्रमणकाल से गुजर रहा है।

आज हिंदी साहित्य का संसार पहले की अपेक्षा कहीं अधिक व्यापक हुआ है। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध और आलोचना के साथ-साथ ब्लॉग, डिजिटल पत्रिकाएँ, सोशल मीडिया और ऑडियो-विजुअल माध्यमों ने साहित्य की पहुँच को नए पाठकों तक पहुँचाया है। अब साहित्य केवल पुस्तकालयों और साहित्यिक गोष्ठियों तक सीमित नहीं रहा। मोबाइल की एक स्क्रीन पर कविता पढ़ी जा सकती है, कहानी सुनी जा सकती है और किसी साहित्यकार के विचार हजारों लोगों तक तत्काल पहुँच सकते हैं। यह परिवर्तन हिंदी साहित्य के लिए एक बड़ा अवसर है।

लेकिन इस बदलते परिदृश्य के साथ कुछ गंभीर चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। सबसे बड़ी चुनौती गहन पठन की घटती प्रवृत्ति है। त्वरित सूचना और मनोरंजन की संस्कृति ने पाठक के धैर्य को प्रभावित किया है। लंबी रचनाओं और गंभीर साहित्य के स्थान पर छोटी, तुरंत प्रभाव डालने वाली सामग्री की लोकप्रियता बढ़ी है। इससे साहित्य के सामने यह प्रश्न खड़ा हुआ है कि वह बदलते पाठक को अपने साथ कैसे जोड़े, बिना अपनी वैचारिक और कलात्मक गंभीरता से समझौता किए।

दूसरी चुनौती साहित्य में बाजार के बढ़ते प्रभाव की है। आज रचना की साहित्यिक गुणवत्ता के साथ उसकी बिक्री, लोकप्रियता और प्रचार भी महत्त्वपूर्ण हो गया है। लोकप्रिय होना बुरा नहीं है, किंतु यदि लोकप्रियता ही साहित्यिक मूल्य का एकमात्र आधार बन जाए तो साहित्य की सृजनात्मक स्वतंत्रता प्रभावित हो सकती है। साहित्य का दायित्व केवल मनोरंजन करना नहीं, बल्कि समाज को प्रश्नों से रूबरू कराना और मनुष्य के भीतर संवेदना को जीवित रखना भी है।

फिर भी हिंदी साहित्य की वर्तमान दशा को निराशाजनक कहना उचित नहीं होगा। आज अनेक युवा लेखक सामाजिक विषमता, स्त्री-अस्मिता, दलित चेतना, आदिवासी जीवन, ग्रामीण परिवेश, प्रवासी अनुभव, पर्यावरण, तकनीक और बदलते पारिवारिक संबंधों जैसे विषयों पर लिख रहे हैं। साहित्य में नए अनुभवों और नए विमर्शों का प्रवेश हुआ है। इससे हिंदी साहित्य का संसार अधिक बहुआयामी और लोकतांत्रिक बना है।

हिंदी साहित्य की दिशा का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष उसकी भाषा है। हिंदी को अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए समय के साथ चलना होगा। दूसरी भारतीय भाषाओं तथा उर्दू, अंग्रेजी और विश्व की अन्य भाषाओं से संवाद हिंदी को कमजोर नहीं, बल्कि समृद्ध कर सकता है। भाषा का विकास उसकी बंद सीमाओं में नहीं, बल्कि निरंतर संवाद और आदान-प्रदान में होता है।

डिजिटल युग हिंदी साहित्य के लिए एक नई संभावना भी लेकर आया है। ई-पुस्तकें, डिजिटल पुस्तकालय, ऑनलाइन पत्रिकाएँ और साहित्यिक मंच दूर-दराज के रचनाकारों तथा पाठकों को जोड़ रहे हैं। आने वाले समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी तकनीकों का प्रभाव भी साहित्य पर पड़ेगा। ऐसे समय में आवश्यकता इस बात की होगी कि तकनीक साहित्य की सहायक बने, उसकी सृजनात्मक आत्मा का विकल्प नहीं।

हिंदी साहित्य की दिशा अंततः मनुष्य की दिशा से जुड़ी है। जब तक मनुष्य के भीतर प्रेम, करुणा, संघर्ष, स्वप्न और प्रश्न जीवित हैं, तब तक साहित्य भी जीवित रहेगा। आवश्यकता केवल इतनी है कि साहित्य समय की चुनौतियों से आँखें न चुराए और न ही अपनी परंपरा से संबंध तोड़े।

आज हिंदी साहित्य के सामने चुनौती बड़ी है, लेकिन संभावनाएँ उससे भी बड़ी हैं। उसे परंपरा की जड़ों से शक्ति लेकर आधुनिकता की शाखाओं को विस्तार देना होगा। उसे पुस्तक के पन्नों से निकलकर डिजिटल संसार तक पहुँचना होगा, लेकिन अपनी साहित्यिक गरिमा और मानवीय संवेदना को अक्षुण्ण रखते हुए।

कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य की दशा परिवर्तनशील है और उसकी दिशा संभावनाओं से भरी हुई। आने वाला समय उसी साहित्य का होगा जो समय की सच्चाइयों को पहचानते हुए मनुष्य के पक्ष में खड़ा रहेगा। साहित्य का अंतिम लक्ष्य केवल शब्दों को सुंदर बनाना नहीं, बल्कि शब्दों के माध्यम से समाज और मनुष्य को अधिक संवेदनशील, विवेकशील और मानवीय बनाना है।

नीता त्रिपाठी

संगीत समारोह: बेंगलुरु में युवा गायकों को मिला सम्मान

06.09.2026 को बेंगलुरु के कोरमंगला ऑडिटोरियम में आयोजित एक भव्य संगीत समारोह में युवा गायकों को पुरस्कार प्रदान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह कार्यक्रम पूजा म्यूजिक अकादमी, बल्लेंदूर, बेंगलुरु में वोकल म्यूजिक सीख रहे प्रतिभाशाली युवा गायकों की शानदार प्रस्तुतियों से सुसज्जित था। इस

अवसर पर मुख्य अतिथि ने अपनी पत्नी दर्शना मंसोत्रा एवं बेटी पूजा मंसोत्रा के साथ मिलकर मंच पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने वाले युवा गायकों को पुरस्कार प्रदान किए।

इन सभी होनहार कलाकारों के उज्ज्वल भविष्य और संगीत के क्षेत्र में निरंतर सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ दी गईं।

जो खुद पर गुजरी है पुस्तक का विमोचन गोपाल दास नीरज साहित्य समूह द्वारा किया गया

सीमा रंगा इन्द्रा

गोपालदास नीरज साहित्य समूह बैनर तले एक भव्य कवि सम्मेलन एवं पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें राष्ट्रवादी कवि अर्जुन सिसोदिया एवं ऋषि कुमार मुख्य अतिथि रहे । यशस्वी उपन्यासकार एवं प्रोफेसर विकास शर्मा की अध्यक्षता में हुए इस कार्यक्रम में दो पुस्तकों का विमोचन हुआ जिनमें मंच के अध्यक्ष व श्रृंगार के सशक्त हस्ताक्षर अशोक भारद्वाज एवं मंच की सचिव कवयित्री रचना भारद्वाज की लिखी पुस्तक जो खुद पे गुजरी है और मंच के कार्यकारिणी सदस्यों के सांझा संग्रह के रूप में नीरज रत्न नामक पुस्तक का भव्य लोकार्पण हुआ । मंच संचालन देश की जानी मानी दोहाकारा डॉ. वर्षा सिंह ने किया । कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो.विकास शर्मा की प्रेरक प्रस्तुति और अर्जुन सिसोदिया के गंगा अवतरण ने कार्यक्रम को ऊँचाइयाँ प्रदान की । कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ संजय जैन के मुक्तकों ने भी बेहतरीन समां बांधा । कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो. विकास शर्मा जी ने जो खुद पर गुजरी है पुस्तक की समीक्षा में कहा कि ऐसी पुस्तकें ही हिंदी साहित्य को समृद्ध करती हैं । उन्होंने कहा कि मैंने इस पुस्तक की सभी रचनाओं को भलीभांति पढ़ा तो पाया कि इसकी प्रत्येक रचना आदर्श और प्रेरक है । श्री ऋषि कुमार जी ने अपनी सारगर्भित टिप्पणी में कहा कि मैं मंच के सभी सदस्यों को साधुवाद देता हूँ जो इतना सुंदर सांझा संग्रह प्रकाशित करवाया । उन्होंने कहा कि वे इतने भव्य और उत्कृष्ट साहित्यिक कार्यक्रम का हिस्सा बनने पर गौरवान्वित हैं । राष्ट्रवाद के सशक्त हस्ताक्षर श्री अर्जुन सिसोदिया जी ने अब्दुल हमीद व देश के समस्त शहीदों व बलिदानियों के प्रति नतमस्तक होते हुए ओजपूर्ण मुक्तकों से सभागार को रोमांचित कर दिया तथा अपनी छंदबद्ध रचनाओं से प्रत्येक श्रोता को भावसंसार में पहुंचा दिया । वहीं मंच के सदस्यों की आदर्श प्रस्तुतियों ने भी कार्यक्रम में आए श्रोताओं को दाँतों तले उँगली दबाने पर मजबूर किया । काव्य पाठ करने वाले कवियों में मंच के अध्यक्ष अशोक भारद्वाज, मंच की सचिव रचना भारद्वाज, डॉ नाथूलाल लोटवाड़ा , मंच के कोषाध्यक्ष एवं गजलकार जयसिंह जीत , गीता राघव , सीमा वत्स , यशस्वी गीतकारा सीमा रंगा इंद्रा, अदिति अस्थाना , गायत्री खंडेलवाल , आयुष भारद्वाज उर्फ फिलॉसफर स्टोन की हिंदी अंग्रेजी मिक्स कविता ने भी सबको बेहद आकर्षित किया ।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को उनके जन्मदिवस पर काव्यांजलि

काशी की पावन धरती पर,
एक प्रभात सुनहरा था,
गंगा की लहरों में जैसे,
शब्दों का उजियारा था।

कलम उठी तो अक्षर-अक्षर,
जन-मन का स्वर बन बैठा,
मूक पड़े इतिहास के पन्नों में,
चेतन स्पंदन भर बैठा।

आयु भले ही छोटी थी,
संकल्प मगर आकाश हुआ,
एक अकेला दीप जला तो,
चारों ओर प्रकाश हुआ।

कविता में करुणा बहती थी,
नाटक में प्रश्न उठाते थे,

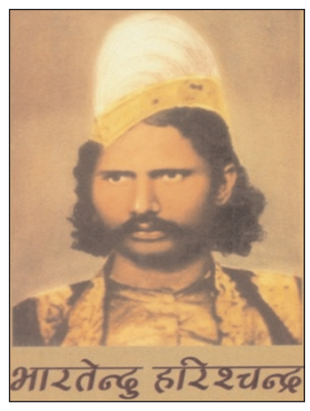

व्यंग्य-बाण से विसंगतियों के,
मुखौटे दूर हटाते थे।

पत्रकारिता उनके हाथों में,
केवल शब्द-संभार नहीं थी,
वह सोई चेतना को जगाती,
जन जन की हुँकार बनी थी।

भारत की पीड़ा जब देखी,
अंतर उनका द्रवित हुआ,
देश-व्यथा का प्रत्येक स्पंदन,
उनकी लेखनी में अंकित हुआ।

हिंदी उनके लिए केवल,
बोलचाल की भाषा न थी,
वह संस्कृति की जीवित धारा,
भारत की आत्मा-सी थी।
अंधेर नगरी के व्यंग्य में,
व्यवस्था का चेहरा दिखलाया,
हँसते-हँसते गहरी चोटों का,
अर्थ हमें समझाया।

अल्प समय की जीवन-यात्रा,
लेकिन कर्म विराट रहा,
देह समय के साथ चली गई,
अक्षर आज भी साथ रहा।

जिसने शब्दों को कर्म किया,
जिसने हिंदी को मान दिया,
युगद्रष्टा साहित्य-साधक को,
शत-शत नमन अर्पित किया।

काशी के उस अमर सितारे को,
शत-शत नमन हमारा रहे,
जब तक हिंदी जीवित रहेगी,
तब तक उनका स्मरण रहे।
दिनेश पाल सिंह दिव्य
चन्दौसी जनपद संभल

ऐ विलीजा

कौन है तू,
मैं तो तुझको जानूँ न,
पहचानूँ न,
फिर अचानक क्यों,
दस्तक हुई, मेरे मन में तेरी?
मैं तो गहरी नींद में थी,
क्यों खोल दी तुम ने आँखें मेरी?
कौन है तू–
नर या मादा?
यह तो बता?
तू क्या मुझ को बतलाना चाहे,
कौन-सी राह दिखलाना चाहे?
कोई नाम है, या एहसास है,
कोई भूली-बिसरी याद,
या आने वाली कोई आस है ?
एक अनकहा अहसास है,
किसी नदी की बहती धारा है,

या मन की गहरी प्यास है?
भोर की खामोशी में
क्यों मुझ तक चल कर तू आई
शब्द तो हो, पर अर्थ है क्या,
यह बात न मुझ को समझ आई?
कहीं मेरा कोई अनकहा हिस्सा हो?
जो बरसों से था नींद में
सुनाने आई, वो, किस्सा हो?
ऐ विलीजा–
तू जो भी है,
जैसी भी है,
अब आ गई है,
कुछ कह तो सही...
क्यों मुझे जगाया भोर में?
मन भटक रहा इस शोर में?
कुछ तो बता , सखी,
कुछ तो बता?????
एक सवाल आप सबसे–
क्या आप में से कोई जानता है,
विलीजा क्या है?
आज इस शब्द ने अचानक भोर में
मेरे मन में दस्तक दी,
मैंने इस शब्द पहले कभी न सुना,न पढ़ा है।
दिमाग से झटकना चाहा,पर शब्द में एक कशिश लगी और छोड़ न पाई,और न ही इस शब्द ने मुझे छोड़ा।
कुछ लिखवा कर ही शांत हुआ।
कौन है यह विलीजा–
नाम, एहसास, कोई स्मृति
या कुछ और?
हमारे मंच पर बहुत बुद्धिजीवी हैं।
अगर आप में कोई कुछ जान सके,
तो मुझे भी जरूर बताइएगा।

रोजी शर्मा

माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री प्रो. एस. पी. सिंह बघेल जी ने सारही यूथ क्लब ऑफ अमरेली द्वारा संचालित सारही तपोवन आश्रम का दौरा किया

अमरेली, गुजरात

आश्रम में निराश्रित एवं जरूरतमंद बुजुर्गों के लिए सम्मानजनक जीवन, आवास, भोजन, स्वास्थ्य सुविधाओं एवं अन्य आवश्यक सेवाओं की समुचित व्यवस्था की गई है। इस अवसर पर मंत्री जी ने आश्रम की सेवा-व्यवस्थाओं का अवलोकन किया तथा समाज के वंचित, असहाय एवं बुजुर्ग वर्ग के लिए संस्था द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों की सराहना की।

सेवा, संवेदना और मानवीय गरिमा को समर्पित सारही तपोवन आश्रम की यह पहल समाज के लिए अत्यंत प्रेरणादायी है।

इस पुनीत एवं अनुकरणीय सेवा कार्य के लिए माननीय मंत्री जी ने पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री पुरुषोत्तमभाई रूपाला जी एवं श्री दिलीपभाई संघाणी जी सहित सारही यूथ क्लब से जुड़े सभी पदाधिकारियों और सेवाभावी कार्यकताओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

चांद

चांद ने छुप कर किया है रात को बिरहन
भोर में कुम्हला रहा है अनछुआ सा मन
टकटकी बांधे प्रतीक्षा ही रही उजियार की
चाह थी लिख दें कथाएं रूप की अभिसार की
मंत्रवत जपती रही जिस नाम को मैं अनवरत
पा सकूं उनको नहीं ये बात थी अधिकार की
करवटों में ,सिलवटों में टूटता सा तन
चांद ने छुप कर किया है रात को

बिरहन

ताप से अकुला रही थी, हो गई थी अनमनी
सौ सितारे टांकती सर से हटी थी ओढ़नी
किन्तु ये आदेश था सब छोड़ कर के सो रहो
सेज पर जैसे अकेले हो गई थी बंदिनी
वो समय अंकित हुआ दो पार इक्यावन
चांद ने छुप कर किया है रात को बिरहन
दस दिवस बीते कटेगा और बाकी मास भी
बिन तुम्हारे बढ़ रहा है अनकहा ये त्रास भी
मै नहीं स्वीकृत करूंगी किश्त कोई प्रेम में
पास हो जाओ सदा को या रुके ये सांस भी
मैं सुहागन क्यों जिऊं ये मौसमी अनबन
चांद ने छुप कर...
चांद ने छुप कर किया है रात को बिरहन
भोर में कुम्हला रहा है अनछुआ सा मन
प्रीति त्रिपाठी

भक्ति गीत : कान्हा हिंदी को हँसाना

जय जय मोहन माधव जय जय घनश्याम,
राष्ट्रभाषा का मुकुट कर दो हिंदी के नाम।
तुम बजाते रहो वंशी, और चरते रहो गैया,
तेरे चरणों में है कृष्णा कोटि कोटि प्रणाम।

कान्हा, कान्हा तुम हिंदी को हँसाना,
देश में राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाना।

अंग्रेजी कभी आगे नहीं बढ़ने देती है,
अपनी कृपा से, इसको आगे बढ़ाना।
कान्हा.....

राजनेता कभी कुछ भी नहीं करते हैं,
राष्ट्रभाषा बनाने से बहुत ही डरते है।
बार बार अंग्रेजी मारती रहती है ताना,
पीछा नहीं छोड़ रहा है अतीत पुराना।
कान्हा.....

पर हिंदी ने अभी हार नहीं मानी है,
बड़ी ही गौरवशाली इसकी कहानी है।
प्रभु इसको इसका अधिकार दिलाना,
नहीं चलने देना नेताओं का बहाना।
कान्हा.....

चुनाव से पहले जो किया था वादा,
जितने के बाद, बदल गया इरादा।
हर संकट से प्रभु, हिंदी को बचाना,
इसको कोई अच्छा रास्ता दिखाना।
कान्हा.....

हिंदी को बना दो घर घर की बोली,
यह भाषा है बड़ी मधुर और भोली।
ब्रज का हिंदी से, नाता रहा पुराना,
अच्छा लगेगा हिंदी में रास रचाना।
कान्हा.....

सूबेदार कृष्णदेव प्रसाद सिंह,

शायद हम मिल जाएं कभी

प्रिय हम दोनों मिल भी जाएं कभी अगर,
तो पहले सा वो परिदृश्य कहाँ होगा।
ऑखों में अश्क तो आ जा? कदाचित,
पर ऑखों में तेरा अक्स कहाँ होगा।
धड़कने तेज हो जा? मेरी शायद,
पर होंठों पे कोई लफ़्ज कहाँ होगा।
यादों का महल भी सजा होगा मन में,
किन्तु कयाम उसमें तेरा कहाँ होगा।
स्यात पपीहा भी कूक उठे मिलें जब हम,
हर कूक में मेरा ही दर्द बयाँ होगा।
चाँदनी बिखेरेगी फिर उजाला मगर,
पर उसमें शबनम का अश्क घुला होगा।
ख़्वाब आएंगे रातों में फिर से मगर,
बीच हमारे फैला एक धुआँ होगा।
हम मिल भी जा? पुनः एक बार कहीं,
शायद मन पर ताला एक जड़ा होगा।
राजेश कुमार 'राज'

चिंतन (8)

सम्बंध बड़े अनमोल तो होते ही हैं , नाजुक भी बहुत होते हैं । सम्बंधों की परिभाषा के कई प्रारूप होते हैं । मामा-मामी , बुआ-फुफड़ , मासी -मौसा बगैरा बगैरा । इन के साथ एक और सम्बंध जुड़ जाता है जब लड़के या लड़की की शादी होती है । दो दिलों का मिलन तो होता ही है , दो परिवारों का मिलन भी होता है । अब शुरू होता है समय सम्बंधों को बना कर रखना का । सम्बंध जुड़ तो गये अब उन्हें निभाने का सलीका आना भी अनिवार्य है । दामाद घर आ गये तो दो दिन पूरी , दो दिन परॉठे और पॉचवें दिन से वही रोटी चावल । चाय में भी मिठाई लुप्त हो जाती है और आ जाती है नमकीन की बारी । और दामाद जी दो चार दिन बाद भाग खड़े होते हैं । अब आ जाओ ससुराल वालों पर । यह भी बड़ा नाजुक सम्बंध होता है । दो चार बार तो ठीक , फिर शुरू होता है क्या लेकर आए हैं और हमने कितना कुछ दिया है । शुरू हो गई टसल लेन देन से ही । सम्बंधों में यरा सी दरार आई नहीं कि मनमुटाव तक पहुँच जाना कोई आश्चर्य नहीं । उसके उपर बातें । कहावत कि सीक्रेट्स केवल अपने तक ही सेफ रहते हैं । जैसे ही बात किसी दूसरे से की तो आपकी कही बात आग की तरह फैलती चली जाती है , वह भी नमक मिर्च लगाकर । लोग तो सुनी बातों को चटकारे लेकर ही दूसरों को सुनाते हैं । उनके लिए रिश्तों की कोई अहमियत नहीं होती । उन्होंने तो जो आग में घी डालने का काम करना है वह तो कर ही चुके होते हैं । कमियॉ किस घर या इन्सान में नहीं होती । अगर यह बात समझ आ गई तो समझो आपने जग जीत लिया । अपनों की बात दूसरों से करनी ही क्यों है । अपने तक ही सीमित क्यों नहीं रख सकते । छोटी मोटी बातों को नजर अन्दाज करना भी एक गुण है । उस से सम्बंधों में बिखराव नहीं आता । यहॉ टकराव न हो तो विखराव कैसे हो सकता है । कहते हैं जो भाषा आप अपने आफिस में कार्य करते समय बोलते हैं अगर वही भाषा आप घर में बोलेंगे तो घर में भी सम्बंधों में प्रेम की गंगा बहने लगेगी । अगर कोई किसी को मॉ की गाली देता है तो उसे बहन की गाली सुनने के लिए तैयार रहना चाहिए । कहने का तात्पर्य जब सम्बंधियों की बात दूसरों से करोगे तो एक न एक दिन उन तक बह बात पहुँच ही जानी है । तब उसके जबाब का अनुकूल जबाब आप कैसे सोच सकते हैं । कभी सोच कर देखो यह कहावतें भी अपना कितना पक्ष रखने में कामयाब होती हैं ।

अपने अपने ही होते हैं उन की कमियों का गुणगान करके कुछ मिलने वाला तो है नहीं , हॉ इसके उल्ट सम्बंधों में दरार आने वाले रीजल्ट मिलेंगे ।

अगर आपका सम्बंधी कोई गरीब है तो क्या हुआ । उसका दोष कैसे मान सकते हैं । गरीबी के कारण क्या उस के मान सम्मान में गिरावट नहीं आनी चाहिए । बिल्कुल नहीं , कभी नहीं । वल्कि यथायोग्य उनकी सहायता करना फर्ज.ही नहीं धर्म बन जाता है । चलो मान लिया , आप उनकी मदद नहीं कर सकते तो उनकी खिल्ली उड़ाना कहॉ की बहादुरी है । इससे आपका यश भी अपयश कहलाता चला जाएगा । जिससे बचना चाहिए ताकि रिश्तों का मान सम्मान , रिश्ते की परिपक्वता , गहरी होती चली जाएगी ।

अगर कोई किसी के घर आता है तो अपना समझ कर वर्ना दूर से किराया भाड़ा लगाकर, अपना समय निकाल कर कोई खाना खाने या अपनी बुराइयॉ सुनने के लिए नहीं आता । वैसे भी आज के समय में किसी के पास समय ही नहीं रहा कि किसी अपने नजदीकी सम्बंधियों के घर दो चार दिन से ज्यादा रह सके । क्योंकि उसके अपने पचास काम बिगड़ रहे होते हैं बस खींच लाती है तो रिश्तों की मयार्दा , रिश्तों की मिठास , सम्बंधों का अपनापन और मिलने की तड़प । आदमी क्या लेकर आता है । जो करता है इस संसार में ही आकर करता है । एक मॉ के दो बेटे और बेटी है । बेटी को कैसा घर मिलेगा कोई नहीं जानता । चेहरा देख कर तो पता नहीं चलता आगे आने वाला समय क्या क्या दिखलाएगा। अच्छा या बुरा नहीं कह सकते । एक भाई को अच्छी नौकरी मिल गई , वह सम्भल गया । दूसरे को मजदूरी करनी पड़ी यह उसकी किस्मत । मगर उन दोनों भाइयों का प्यार तो कभी हल्का नहीं पड़ना चाहिए । पैसों को रिश्तों के बीच आने ही नहीं देना चाहिए । पैसा ही तो है फसाद की जड़ । पैसे को रखो एक तरफ, तब नजर आएगी रिश्तों की मिठास , रिश्तों में अपनापन । गॉठ बॉध लो सुख दुख के समय अपने ही साथ खड़े होते हैं , और अपनों से ही आपकी आन ,वान और शान होती है । वीरानों में उगा फूल भी किसी को

भाता नहीं है । मेरा यह मानना है कि अपनों को गले न लगाओ मगर अपने साथ खड़ा तो कर सकते हैं । सम्बंधों में अपनापन , सम्बंधों में मिठास को बनाए रखना बहुत जरूरी है ।सोचकर देखें आप भी मेरे कथन से सहमत होंगे ।

वीरेन्द्र कुमार मन्सोतरा
उप कमॉडेण्ट सीमा सुरक्षा बल (रीटायर्ड)
उद्योग विहार , सैक्टर 22 द्वारका नई दिल्ली -110077

Brown Long-Eared Bat in Forest Environment

राष्ट्र सेवा के समर्पित प्रतीकः लेफ्टिनेंट जनरल वी. के. चतुवेर्दी का कार्यालय आगमन

भारतीय सेना के अत्यंत सम्मानित एवं प्रतिष्ठित सेवानिवृत्त अधिकारी लेफ्टिनेंट जनरल वी. के. चतुवेर्दी (ढश्रट, अश्रट, श्रट) का हमारे कार्यालय में आगमन अत्यंत गौरव और सम्मान का विषय है। भारतीय सेना में अपने दीर्घ एवं गौरवपूर्ण सेवाकाल के दौरान उन्होंने सैन्य नेतृत्व, आर्टिलरी के आधुनिकीकरण तथा मानव संसाधन एवं कार्मिक प्रबंधन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उन्होंने आर्मी हेडक्वार्टर में डायरेक्टर जनरल (मैनपावर प्लानिंग एवं पर्सनल सर्विसेज) के महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वहन किया तथा आर्टिलरी के एडिशनल डायरेक्टर जनरल के रूप में भी अपनी विशिष्ट सेवाएँ प्रदान कीं।

उनके अनुभव, प्रशासनिक दक्षता एवं राष्ट्रसेवा के प्रति समर्पण को देखते हुए उन्हें अयोध्या स्थित श्रीराम मंदिर के ट्रस्ट के प्रबंधन से संबंधित तीन सदस्यीय समिति में सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया है।

ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्तित्व का सान्निध्य एवं मार्गदर्शन हमारे लिए प्रेरणादायी है, और यह अवसर हमारे कार्यालय के लिए निश्चित रूप से स्मरणीय रहेगा।

अस्मिता की रक्षा

घात जो लगाई गर, अस्मिता वतन पर,
चूड़ी वाले हाथ फिर, तेग लहराएगी।

सरहद रखवाले, आठों याम डेरा डाले,
तुम्हारा ये कर्ज माटी, चुका नहीं पाएगी।

जनता को भिड़ाकर, राजनीति क्रीड़ा कर,
चालबाजी उनकी वो, काम नहीं आएगी।

सिंह गर्जना सा दम, नाखून कटार सम,
दुश्मनों की छाती चीर, आर पार जाएगी।

माटी की सौगंध हमें, शीश भले कट जाए,
भारत की आन पर, आँच नहीं आएगी।

सीमा के जवान जब, बन काल बरसेंगे,
बैरी की प्राचीर भी, काँप-काँप जाएगी।

सिंहों के समान जब, गरजेंगे रणवीर,
बैरियों की साँसों में भी, साँस नहीं आएगी।

जाति-पाति भूल सब, एकजुट हो के आज,
माटी का ये कर्ज पूरी, कौम ही चुकायेगी।

माटी की सौगंध हमें, शीश भले कट जाए,
भारत की आन पर, आँच नहीं आएगी।

सीमा के जवान जब, बन काल बरसेंगे,
बैरी की प्राचीर भी, काँप-काँप जाएगी।

शेरों के समान जब, गरजेंगे रणवीर,
बैरियों की साँसों में भी, साँस नहीं आएगी।

डॉ पारुल राज, दिल्ली

भारत का विकास : 2014 से 2026 तक शिक्षा के क्षेत्र में नई उड़ान

भारत के विकास की सबसे मजबूत नींव शिक्षा है। वर्ष 2014 से 2026 के बीच देश की शिक्षा व्यवस्था में पहुँच, गुणवत्ता, डिजिटल तकनीक, कौशल, शोध, नवाचार और समावेशिता के स्तर पर व्यापक परिवर्तन दिखाई देते हैं। इस अवधि में शिक्षा को केवल डिग्री प्राप्त करने का माध्यम न मानकर ज्ञान, कौशल, रोजगार, आत्मनिर्भरता और राष्ट्र निर्माण का आधार बनाने की दिशा में अनेक कदम उठाए गए।

सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के रूप में सामने आया। नई नीति ने शिक्षा को अधिक लचीला, बहुविषयक और विद्यार्थी-केंद्रित बनाने पर जोर दिया। 5+3+3+4 संरचना, प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल, बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान, मातृभाषा में शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, अनुभवात्मक सीखने और आलोचनात्मक चिंतन को विशेष महत्व दिया गया। ठएढ का लक्ष्य शिक्षा को 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाना है।

समग्र शिक्षा : स्कूल शिक्षा का व्यापक विस्तार

2018 से समग्र शिक्षा योजना ने पूर्व-प्राथमिक से कक्षा 12 तक विद्यालयी शिक्षा को एकीकृत दृष्टिकोण से जोड़ने का काम किया। 2021-22 से 2025-26 तक इसके लिए 2,94,283.04 करोड़ का कुल वित्तीय प्रावधान किया गया, जिसमें केंद्र का हिस्सा 1,85,398.32 करोड़ था। इस योजना के अंतर्गत सरकारी और सहायता प्राप्त विद्यालयों में बुनियादी सुविधाओं, शिक्षक प्रशिक्षण, डिजिटल शिक्षा, बालिका शिक्षा, समावेशी शिक्षा और कौशल विकास को समर्थन दिया गया।

सरकारी रिकॉर्ड के अनुसार 2018-19 से 2024-25 के बीच 80,105 विद्यालयों को अतिरिक्त कक्षाओं सहित मजबूत किया गया, 1,38,802 विद्यालयों को कउळ एवं डिजिटल पहलों के अंतर्गत सहायता मिली और 9,477 विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा को समर्थन दिया गया।

PM SHRI : आदर्श विद्यालयों की नई अवधारणा

प्रधानमंत्री स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया (PM SHRI) योजना 2022 में शुरू की गई। इसका उद्देश्य 14,500 से अधिक मौजूदा विद्यालयों को आधुनिक, गुणवत्तापूर्ण और NEP 2020के अनुरूप आदर्श विद्यालयों के रूप में विकसित करना है। इसके लिए 2022-23 से 2026-27 तक 27,360 करोड़ का प्रावधान किया गया।

जुलाई 2026 तक सरकारी रिकॉर्ड के अनुसार 13,092 ढट रल्फक विद्यालय चयनित किए जा चुके थे। इन विद्यालयों में आधुनिक शिक्षण पद्धति, तकनीक, कौशल, समावेशी वातावरण और 21वीं सदी की क्षमताओं पर जोर दिया जा रहा है।

बालिका शिक्षा और समान अवसर

शिक्षा के क्षेत्र में भारत की प्रगति का एक महत्वपूर्ण पक्ष बालिकाओं की बढ़ती भागीदारी है। सरकारी आँकड़ों के अनुसार 2014-15 में उच्च शिक्षा में महिला नामांकन लगभग 1.57 करोड़ था, जो 2022-23 में बढ़कर 2.18 करोड़ हुआ। महिला Gross Enrolment Ratio भी 22.9 से बढ़कर 30.2 हुआ। विद्यालय स्तर पर भी बुनियादी सुविधाओं में सुधार हुआ है। सरकारी रिकॉर्ड के अनुसार 2024-25 में 99.3% विद्यालयों में पेयजल सुविधा और 97.3% विद्यालयों में कार्यशील बालिका शौचालय उपलब्ध थे।

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (KGB) जैसी योजनाओं ने सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित वर्गों की बालिकाओं को आवासीय शिक्षा का अवसर देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

PM POSHAN : शिक्षा के साथ पोषण

बच्चे तभी अच्छी तरह सीख सकते हैं जब उनका स्वास्थ्य और पोषण बेहतर हो। इसी दृष्टि से PM POSHAN योजना ने विद्यालयी शिक्षा को पोषण से जोड़ा। सरकारी रिकॉर्ड के अनुसार 2023-24 तक इस योजना के अंतर्गत 12 करोड़ से अधिक बच्चों को लाभ मिला था। लगभग 4.11 लाख विद्यालयों में School Nutrition Gardens विकसित किए गए। इस प्रकार विद्यालय में भोजन केवल कल्याणकारी कार्यक्रम नहीं रहा, बल्कि बच्चों की उपस्थिति, स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़ा महत्वपूर्ण माध्यम बना।

डिजिटल शिक्षा की क्रांति

2014 के बाद डिजिटल तकनीक का शिक्षा में तेजी से विस्तार हुआ। DIKSHA, SWAYAM और SWAYAM Prabha जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म ने विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए ऑनलाइन अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कोविड-19 महामारी के दौरान डिजिटल शिक्षा ने विशेष महत्व प्राप्त किया और उसके बाद ऑनलाइन तथा मिश्रित शिक्षा भारतीय शिक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई।

डिजिटल शिक्षा का सबसे बड़ा प्रभाव यह रहा कि गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक सामग्री को भौगोलिक सीमाओं से बाहर ले जाने की संभावना बढ़ी। ग्रामीण क्षेत्रों और दूरदराज के विद्यार्थियों के लिए भी डिजिटल संसाधनों तक पहुँच का नया मार्ग खुला।

कौशल, नवाचार और कृत्रिम बुद्धिमत्ता

आज शिक्षा का अर्थ केवल किताब और परीक्षा नहीं है। रोजगार की बदलती दुनिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, डेटा विज्ञान, कोडिंग, साइबर सुरक्षा और उद्यमिता जैसे क्षेत्रों का महत्व बढ़ रहा है।

सरकारी रिकॉर्ड के अनुसार जून 2026 तक देश में 10,000 से अधिक अ३ह्ल ढ्ढल्लद्मी१ल्लॅ छुं२ 722 जिलों में स्थापित किए जा चुके थे और इनके माध्यम से 1.1 करोड़ से अधिक विद्यार्थियों को नवाचार से जोड़ा गया। अक शिक्षा के लिए रडअफ कार्यक्रम के अंतर्गत फरवरी 2026 तक 2.30 लाख विद्यार्थियों का नामांकन दर्ज किया गया। यह परिवर्तन भारत के विद्यार्थियों को केवल नौकरी खोजने वाला नहीं, बल्कि नवाचार और उद्यमिता के माध्यम से रोजगार पैदा करने वाला बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण है।

उच्च शिक्षा में उल्लेखनीय विस्तार

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी 2014 के बाद संस्थानों और नामांकन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। सरकारी अकरऌए आँकड़ों के अनुसार विश्वविद्यालयों की संख्या 2014-15 में 760 से बढ़कर 2023-24 में 1,289 हो गई। कॉलेजों की संख्या 38,498 से बढ़कर 48,246 हुई। उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों का कुल नामांकन 3.42 करोड़ से बढ़कर 2023-24 में 4.50 करोड़ हो गया।

उच्च शिक्षा का Gross Enrolment Ratio भी 2014-15 के 23.7% से बढ़कर 2023-24 में 30% हुआ। यह वृद्धि बताती है कि अधिक युवा उच्च शिक्षा की ओर आगे बढ़ रहे हैं।

IIT, IIM और AIIMS जैसे प्रमुख संस्थानों के विस्तार ने उच्च शिक्षा, शोध और विशेषज्ञता के अवसरों को भी बढ़ाया है। सरकारी रिकॉर्ड के अनुसार 2014-15 से 2024-25 के बीच ककळ की संख्या 16 से बढ़कर 23, ककट की संख्या 13 से बढ़कर 21 और अककटर की संख्या 7 से बढ़कर 20 हुई।

शिक्षा से विकसित भारत की ओर

2014 से 2026 तक की शिक्षा यात्रा को केवल विद्यालयों और विश्वविद्यालयों की संख्या से नहीं मापा जा सकता। वास्तविक परिवर्तन तब होगा जब प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, प्रत्येक युवा को कौशल, प्रत्येक बालिका को समान अवसर और प्रत्येक विद्यार्थी को आधुनिक तकनीक तथा रचनात्मक सोच का अवसर मिलेगा।

आज भारत के सामने चुनौती यह है कि शिक्षा की पहुँच के साथ-साथ सीखने की गुणवत्ता, शिक्षक क्षमता, डिजिटल विभाजन, ग्रामीण-शहरी असमानता और रोजगार से शिक्षा का बेहतर संबंध सुनिश्चित किया जाए।

फिर भी उपलब्ध सरकारी आँकड़े बताते हैं कि भारत की शिक्षा व्यवस्था का विस्तार हुआ है और नीति का केंद्र धीरे-धीरे पहुँच से गुणवत्ता, डिग्री से कौशल और पारंपरिक शिक्षा से भविष्य की शिक्षा की ओर बढ़ रहा है।

2026 का भारत उस युवा शक्ति के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ रहा है जो 2047 के विकसित भारत की आधारशिला रखेगी। शिक्षा ही वह शक्ति है जो ज्ञान को कौशल में, कौशल को रोजगार में और रोजगार को राष्ट्र की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति में बदल सकती है।

इसलिए विकसित भारत का सबसे प्रभावी सूत्र है–
हर बच्चे को शिक्षा, हर युवा को कौशल और हर विद्यार्थी को अवसर।

शिक्षित भारत ही सक्षम भारत है और सक्षम भारत ही विकसित भारत का निर्माण करेगा।

सरकारी रिकॉर्ड के प्रमुख आधार

शिक्षा मंत्रालय के UDISE+ 2024-25 आँकड़ेः 14.71 लाख विद्यालय, 24.69 करोड़ विद्यार्थी और 1.01 करोड़ शिक्षक।

शिक्षा मंत्रालय का AISHE 2023-24ः उच्च शिक्षा में 4.50 करोड़ विद्यार्थी और GER 30%

PM SHRI, जुलाई 2026ः 13,092 विद्यालय चयनित।

समग्र शिक्षा, 2018-19 से 2024-25ः 1,38,802 विद्यालय ICT/डिजिटल पहलों से जुड़े।

PM POSHAN: 12 करोड़ से अधिक बच्चों तक पहुँच का सरकारी रिकॉर्ड।

[1]: https://www.pib.gov.in/FactsheetDetails.aspx?Id=150983&lang=3&reg=3&utm_source=chatgpt.com "Factsheet Details:Factsheet Details | PIB"
[2]: https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1993919&lang=1&reg=3&utm_source=chatgpt.com "Press Release Page | Press Information Bureau"
[3]: https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2091737&lang=2&reg=3&utm_source=chatgpt.com "Press Release Page | Press Information Bureau"
[4]: https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2291330&lang=1&reg=48&utm_source=chatgpt.com "Press Release Page | Press Information Bureau"
[5]: https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2217624&lang=1&reg=6&utm_source=chatgpt.com "Press Release Page | Press Information Bureau"
[6]: https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2267960&lang=1&reg=3&utm_source=chatgpt.com "Press Release Page | Press Information Bureau"
[7]: https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2284941&lang=1&reg=3&utm_source=chatgpt.com "Press Release Page | Press Information Bureau"
[8]: https://www.pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?ModuleId=3&NoteId=154714&lang=1&reg=1&utm_source=chatgpt.com "Press Note Details: Press Information Bureau"
[9]: https://dsel.education.gov.in/sites/default/files/Schooling_5th_CS_Conference.pdf?utm_source=chatgpt.com "School Education at a Glance: (UDISE+ 2024-25)"

अपनों से बातें और गीता का सार: डॉ. मंगलमूर्ति की पुस्तक सुनो पार्थ ! की समीक्षा

वक़्त निकालकर
बातें कर लिया करो अपनों से,
अगर अपने ही न रहेंगे
तो वक़्त का क्या करोगे?"

जी हाँ, जिस किसी ने भी यह कहा है - सच ही कहा है। बाबूजी के बाल-सखा आदरणीय डॉ मंगलमूर्ति अंकल (डॉ बी एस मंगलमूर्ति) से मैं जब-तब बातें कर लिया करता हूँ वक़्त-बेवक़्त और उन्होंने कभी बुरा नहीं माना।

बात कुछ साल (2016-17) पहले की है, जब बाबूजी बहुत बीमार चल रहे थे और बिस्तर पर थे। साथ ही वे दिल्ली में मेरे आवास पर साथ रह रहे थे। बाबूजी दुखी थे कि उनके नजदीकी साहित्यिक और अन्य मित्र पटना में थे और वे हमारे साथ दिल्ली में! ऐसे में, मैं हमेशा उनके किसी-न-किसी पुराने परिचित या मित्र से उनकी बात करवाने की कोशिश में रहता था।

मुझे यह तो पता था कि बाबूजी की साहित्यक मंडली में उनसे कई दशक सीनियर नामी-गिरामी साहित्यकार से लेकर कई दशक जूनियर तक थे - उनके छात्र और यहां तक कि उनका फिजियोथेरेपिस्ट उमेश भी उनका साहित्यिक मित्र बन गया था! वह भी कभी-कभी अपनी लिखी कवितायें सुनाया करता था और बाबूजी उसकी कविता भी उतनी तल्लीनता से सुनते थे, जितनी तल्लीनता से बच्चन, प्रसाद, महादेवी वर्मा आदि की।

तो ऐसे में, बाबूजी की बातचीत में, मैं हमेशा सुनता था एक नाम - मंगलमूर्ति अंकल का। ये आचार्य शिवपूजन सहाय के पुत्र हैं और बाबूजी के साथ इन्होंने स्कूल से कॉलेज तक की पढाई की। मंगलमूर्ति अंकल अंग्रेजी के प्रोफेसर हो गए और बाबूजी हिंदी के। बगिया एक ही थी - साहित्य की, लेकिन वृक्ष दो थे - हिंदी और अंग्रेजी। सबसे मजेदार बात यह कि जहाँ बाबूजी को अंग्रेजी साहित्य और इसके इतिहास की जितनी गहरी जानकारी थी उतनी ही गहरी जानकारी मंगलमूर्ति अंकल को हिंदी की !

बाबूजी का देहावसान हो गया 2017 में, तो बाबूजी के अन्य कई करीबी मित्रों की तरह इनसे भी मेरी बातचीत होती रही। बाबूजी के साहित्यिक गतिविधियों को गतियमान रखने के लिए दिशानिर्देश की आयश्यकता थी मुझे और मेरे लिए यह आवश्यक था कि मैं मूर्ति अंकल जैसे किसी अनुभव-प्राप्त व्यक्ति से गाइडलाइन्स लेता रहूँ।

बाबूजी के ब्रह्म-वाक्य "साहित्य लोगों को मिलाता है", का मुझपर असर हुआ और मैं इनकी साहित्यिक गतिविधियों से जुड़ने लगा। "न उम्र की सीमा हो, न जन्म का हो बंधन" - साहित्य ऐसा ही है। उन्होंने मुझे जनवरी २०२० में जब मैं येरेवन (आर्मीनिया) में था, तो अंकल ने बातचीत के दौरान बताया कि उनकी दो पुस्तकें हिंदी में आ रही हैं, जिनमें एक है - "सुनो पार्थ !"

ह्लसुनो पार्थ" - उनके कवर पेज के अनुसार "सम्पूर्ण श्रीमदभगवद् गीता का सरल हिंदी अनुवाद" है। ऐसे में, यह पुस्तक पढ़ने की मेरी इच्छा बनी और सच यह है कि काफी जद्दो-जहद के बाद ऑनलाइन मिल पायी। दो बार तो आर्डर निरस्त हो गया। लेकिन -
जीवन उनका नहीं युधिष्ठिर, जो उससे डरते है
यह उनका जो चरण रूप निर्भय हो कर लड़ते हैं !

बाबूजी की अतिप्रिय पंक्तियों ने सहारा दिया और अंत में पुस्तक पोस्ट से प्राप्त हो गयी।

यूँ तो, "श्रीमद् भगवद् गीता" की न जानें कितनी टिकायें लिखी गईं हैं। आदि शंकराचार्य से लेकर अबतक - गीताभाष्य - आदि शंकराचार्य, गीताभाष्य - रामानुज, गूढ़ार्थदीपिका टीका - मधुसूदन सरस्वती, सुबोधिनी टीका - श्रीधर स्वामी, ज्ञानेश्वरी - संत ज्ञानेश्वर (संस्कृत से गीता का मराठी अनुवाद), गीतारहस्य - बालगंगाधर तिलक, अनासक्ति योग - महात्मा गांधी, ए२२८२ ङ्गल्ल ॠ३ - अरविन्द घोष, ईश्वरार्जुन संवाद- परमहंस योगानन्द, गीता-प्रवचन - विनोबा भावे, गीता तत्व विवेचनी टीका - जयदयाल गोयन्दका, भगवदगीता का सार- स्वामी क्रियानन्द, गीता साधक संजीवनी (टीका)- स्वामी रामसुखदास!

इसी तरह गीता का अस्सी से भी अधिक भाषाओं में अनुवाद हुआ है - पुर्तगाली, जर्मन, फ्रांसीसी, डेनिश, नॉर्वेजियन, स्वीडिश, आइसलैंडिक, फिनिश, रूसी, ऐस्तोनियन्, लिथुआनियाई, लातवियाई, बेलारूसी, यूक्रेनी, पोलिश, हंगेरियन, सर्बो-क्रोएशियाई, सर्बियाई, क्रोएशियाई, अल्बानियाई, स्लोवेनियाई, स्लोवेनियाई, मासेदोनियन, चेक, स्लोवाक, रोमानियाई, बल्गेरियाई, अर्मेनियाई, जॉर्जियाई, अजरबैजान, तुर्कमेन, कजाख, उज्बेक, कराकल्पक, तातार, उम्मर्ट, बश्किर, चुवाश, किर्गिज, ताजिक, मंगोलियाई, इंडोनेशियाई, खमेर, लाओ, कोरियाई, इतालवी, स्पेनिश, डच, ग्रीक, हिब्रू, हिब्रू तुर्की, अरबी, फारसी, थाई, तिब्बती, चीनी, जापानी, वियतनामी, बर्मी, पिजिन इंग्लिश, उड़िया, बंगाली, मलयालम, असमिया, नेपाली, मणिपुरी, तमिल, कन्नड़, नेवारी, हिंदी, उर्दू, सिंधी, गुजराती, मैथिली, मराठी , तेलुगु, सिंघली, स्वाहिली, अफ्रीकी और जुलु।

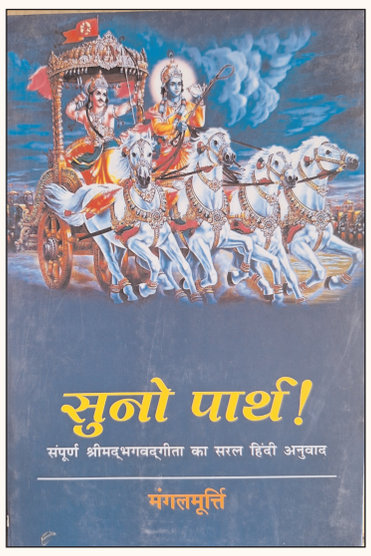

सिर्फ अंग्रेजी में इसकी पंद्रह से अधिक टिकाएं उपलब्ध हैं। गीता पर 25 अगस्त 1978 के दिन भारतीय डाक विभाग ने डाक टिकट भी जारी किया। दूरदर्शन पर प्रसारित "महाभारत" सीरियल में भी "गीता" पर विशेष ध्यान दिया गया। कारण स्पष्ट है - "सरल हिंदी अनुवाद " में जन साधारण को समझाना।

और इसी "सरल हिंदी अनुवाद" को लेकर प्रस्तुत की गयी है प्रस्तुत पुस्तक - "सुनो पार्थ !" इस पुस्तक की सही उपयोगिता और सफलता को समझने के लिए इसके अंतिम कवर पृष्ठ पर की ये पंक्तियाँ काफी हैं - "हाथ का चाबुक नचाते हुए भगवान् श्रीकृष्ण बोले - असल चीज तो आत्मा है। देह में क्या रखा है ? वह तो मिट्टी का खिलौना है। ....."
सत्रहवें अध्याय के शुरूआत में श्री कृष्ण कहते हैं, "मनुष्य की स्वाभाविक वृत्तियाँ ही तीन प्रकार की होती हैं - सात्विक, राजसी एवं तामसी। उसकी श्रद्धा उसके अनुकरण के अनुरूप होती है। .... जैसी जिसकी श्रद्धा, वैसा ही उसका स्वभाव, और वैसी ही उसकी उपासना। "

यहाँ पर ध्यान देने की बात यह है कि प्रस्तुत पुस्तक में गीता को हिंदी भाषा में सुलभ कराना एक बड़ी बात है। कारण स्पष्ट है - जनता के काम की चीज को जनता की भाषा में बताना। यह बात बहुत ध्यान देने की है। तभी तो, संस्कृत के "रामायण" से ज्यादा लोकप्रिय और लोक प्रचलित है -"रामचरितमानस!" पतंजलि का "योगसूत्र" आधार है, परन्तु स्वामी सत्यानंद सरस्वती, अयंगर आदि के द्वारा सरल भाषा में प्रस्तुत होता हुआ बाबा रामदेव के द्वारा जन साधारण की दिन प्रतिदिन की भाषा में आकर आज जन-जन के बीच कल्याणमय बनने को प्रस्तुत हुआ।
लेकिन हम अन्यथा न लें, तो किसी भी ज्ञान को जन-जन की भाषा में, हर चीज को प्रस्तुत करना आसान नहीं है। एक सीमा है! तभी तो, आज विश्व की किसी भी भाषा में देशज, विदेशज शब्दों की बहुतायत है। हिंदी में ही देखें - बस, स्कूटर, स्कूल, मास्टर, इंकलाब, ख्वाब, ... । हर भाषा के शब्द का एक अपना ऊर्जा क्षेत्र होता है, उसकी एक प्रभावशालीनता होती है। "इंकलाब" का अनुवाद किसी भाषा में इसकी पूर्ण ऊर्जा के साथ नहीं हो सकता है। इसी तरह के शब्द हिंदी, अंग्रेजी, फ्रेंच आदि सभी भाषाओं में हैं। उदाहरण अनंत हैं।

इसलिए अगर यह कहा जाये कि इस पुस्तक में भी संस्कृतनिष्ठ शब्दों का भी यथायोग्य उपयोग किया गया है, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। अगर "हे कौन्तेय" (पृष्ठ - 26) की जगह "हे कुंती का बेटा" लिखा जाता, तो आप कैसा महसूस करेंगे। सारा भाव - सारा सम्मान जो कुंती-पुत्र को प्राप्त होना चाहिए था, नष्ट हो जाता है। अगर "शिष्य " (पृष्ठ -19) की जगह पर "चेला" लिखा जाता, तो कैसा लगता? इस तरह के उदाहरण भरे पड़े हैं इस पुस्तक में - "सतगुण", "रजोगुण", "तमोगुण " (पृष्ठ -52)। सभी का जिक्र करना बेकार है। हाँ, कुछ जगहों पर "साधारणीकरण की सम्भावना" थी - "शोकग्रस्त " और "व्याकुलनेत्र" (पृष्ठ - 23) की जगह पर "दुखी " और ""व्याकुल" लिखा जा सकता था, लेकिन उस हालत में वाक्य की प्रभावशीलता उसी तरह घट जाती, जैसी इसी पैराग्राफ में संस्कृतनिष्ठ शब्दों के हटाने से होने की सम्भावना है (मेरे विचार से)।अन्यथा, और अधिक प्रयत्न कर प्रेमचंद की तरह शब्दों का खास चयन करना पड़ता ताकि कहनेवाले और सुननेवाले के बीच पैदा होनेवाली दूरी को दूर किया जा सकता। और एक बात ध्यान देने की है कि हिंदी जो आज की स्वीकृत हिंदी है, उसमें अधिकृत रूप से संस्कृत के शब्दों को आधार रख कर सभी क्षेत्रीय भाषाओँ के समन्वयन से हिंदी के विकास को आगे बढ़ाना है। सरकारी रूप से तो अंग्रेजी और कई अन्य विदेशी भाषाओं के शब्दों या शब्द-समूह का प्रयोग स्वीकृत है। अतः इस पुस्तक में अनुवाद को मात्र कुछ ही जगहों (स्थान, न लिखकर) पर बोलचाल की हिंदी में बदला (परिवर्तित किया, न लिखकर) जा सकता था!

अंत में, श्री कृष्ण-मुख से दो उदाहरण देना चाहता हूँ झ

(१) "हे पार्थ ! ऐसे अविवेकी लोग वेद के सकाम कर्मकांड की बातों में ही सुखी रहते हैं। वे समझते हैं कि स्वर्गादि सुख देने वाले कर्मकांड से बढ़कर और कुछ भी नहीं, तथा उसका बखान वे सुन्दर अलंकृत शब्दों में करते नहीं अघाते !" (पृष्ठ 27
(२) "हे पार्थ ! बहुत ही भाग्यवान होते हैं वे क्षत्रिय जिनको धर्मयुद्ध के ऐसे सुअवसर प्राप्त हो जाते हैं और जो इस प्रकार उनके लिए स्वर्ग का द्वार ही खोल देते हैं। " (पृष्ठ -२26)
अतः मूर्ति अंकल का यह प्रयास आज की सामाजिक, राजनितिक, व्यावसायिक और अंतर्राष्ट्रीय आदि समग्र रूप में देखने पर एक धरोहर बन सकता है क्योंकि हम सभी संस्कृत नहीं जानते और तार्किक रूप से बहुत अन्वेषण या विश्लेषण न कर सही मार्ग का दिशा-निर्देश चाहते हैं। इसलिए यह प्रयास ऐसा ही है - "कर्मण्येव अधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन" या दूसरे शब्दों में - "आगे के कवि (यहाँ जनता-जनार्दन) रिझियें तो कविताई, न तो राधिका-कन्हाई सुमिरन को बहानो है !"

मैं अंकल के इस पुनीत कार्य से बहुत प्रभावित हूँ और शायद उसका कारण भी बताना उचित होगा। मैंने रिटायरमेंट के पहले कांसुलर-कार्यों में भी "श्रीमद्भगवद्गीता" का उतना ही उपयोग किया है, जितना और बड़े लोगों ने अपने जीवन की समस्याओं के हल निकालने के लिए किया है। यह हर व्यक्ति की हर समस्या का हल अपने में समाहित रखता है - "कर्म, अकर्म, विक्रम" - ये तीन मूलाधार हैं। कांसुलर के कार्यों में गीता की उपयोगिता पर कभी बाद में लिखना उचित होगा।

अभी तो आप गीता की पुस्तक को रट्टामार पुस्तक की तरह न पढ़ें, कोई फायदा नहीं है - "पोथी पढ़ी पढ़ी जग मुआ, पंडित भया न कोय" - आप गीता का अनुसरण करें। अनुसरण के लिए हिंदी में गुरु-दीक्षा की यह अक्षरमाला हो सकती हैं, शेष हम सब पाठकों के हाथ में है।

अन्य अनुवादों में सहजता नहीं है और वे भी भाषा अधिकारियों के क्षेत्र में सीमित हो जाती है। जबकि इस पुस्तक की खासियत है कि मूल भावना, मूल आत्मा, मूल के निकट रखते हुए जन साधारण को मूल भाव से अवगत कराने की क्षमता है इस पुस्तक में। अतः आप अगर अपनी भाषा में गीता के मूल भाव को जानने के इच्छुक हैं, यह एक पथ प्रदर्शक हो सकता है।

शंभु अमिताभ

आकाशवाणी रोहतक में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित काव्य गोष्ठी रिकॉर्डिंग हेतु सुबह सुबह ही कवयित्री द्वय डॉ प्रीता पंवार एवं प्रीति पाठक प्रीति संग प्रस्थान।संचालन की भी रहेगी जिम्मेदारी।आभार अनुज डॉ मनोज कुमार जिला सूचना एवं जन संपर्क अधिकारी यमुनानगर पूर्व प्रबंधक (राजभाषा) डब्यूसीएल कोल इंडिया।

एक अनूठा, अद्भुत और अविस्मरणीय काव्य समारोह है दिल्ली का रामजस कवि सम्मेलन। क्यों और कैसे जानिए?

मित्रों, आज मन हुआ कि आपको रामजस संस्थान द्वारा आयोजित एक विशिष्ट कवि सम्मेलन की जानकारी दी जाए। यह दिल्ली में पिछले 21 सालों से निरंतर आयोजित होने वाला एक अद्भुत आयोजन है। इस समारोह का आयोजन रामजस संस्थान के अंतर्गत बाबूराम हैप्पी स्कूल के तत्वावधान में मेरी आत्मीय बड़ी दीदी वसुंधरा शर्मा जी के संयोजन में होता है। इस समारोह में तीन वर्गों में संस्थान के लगभग 40 बच्चे प्रतिवर्ष अपनी स्वरचित कविताओं का पाठ करते हैं। इस प्रकार पिछले 21 वर्षों में लगभग 840 छात्र अपनी स्वरचित कविताओं का पाठ कर चुके हैं। इस समारोह में प्रतिवर्ष 5 कवियों की उपस्थिति रहती है। एक कवि मुख्य अतिथि, एक विशिष्ट अतिथि और तीन निर्णायक की भूमिका में रहते हैं। यह सभी कविगण बाल कवि सम्मेलन के बाद अपनी कविताएं भी सुनाते हैं। मुख्य बात यह है कि प्रतिवर्ष पांच नए कवियों को जोड़ा जाता है। इस तरह से इस समारोह में अब तक 105 कवियों की उपस्थिति हो चुकी है। जिनमें देश के अनेक सुप्रसिद्ध कवि यथा - सर्वश्री बाल स्वरूप राही जी, बलवीर सिंह करुण जी, पदमश्री सुरेंद्र शर्मा जी, डॉ हरिओम पंवार जी, कृष्ण मित्र जी, संतोषानंद जी, डॉ कुंवर बेचैन जी, ओम प्रकाश आदित्य जी, जैमिनी हरियाणवी जी सहित अनेक प्रतिष्ठित और लोकप्रिय कवि पधार चुके हैं। मैंने इसी संस्थान में व्याख्याता के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की हैं। हास्य कवि सुरेंद्र शर्मा जी, जैमिनी हरियाणवी जी, नवगीतकार सुभाष वशिष्ठ जी, यूसुफ भारद्वाज जी और भाई राकेश सोनी जी जैसे कवि इसी संस्थान के छात्र रहे हैं। पिछले 21 वर्षों से, मैं कार्यक्रम की आधारभूत संरचना से लेकर आज तक इस समारोह से जुड़ा हुआ हूं और सभी 21 कवि सम्मेलनों में मेरी उपस्थिति और सहभागिता रही है। इस समारोह के प्रति बाबूराम हैप्पी स्कूल की पूर्व प्रधानाचार्य वसुंधरा दीदी के समर्पण, उनकी वाणी, वव्यवहार और हिंदी के प्रति प्रतिबद्धता मुझे निरंतर चमत्कृत करती रहती है। इस वर्ष उनका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं था लेकिन उन्होंने पूरी सकर्मक सकारात्मक चेतना के साथ संयोजन का दायित्व निभाया। इस वर्ष के आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ सारस्वत मोहन मनीष जी, विशिष्ट अतिथि भाई मनवीर मधुर जी और निर्णायक कविगणों में भाई विनोद पांडे, सुंदर कटारिया और उषा श्रीवास्तव जी की उपस्थिति रही। मुझे लगता है कि भारत वर्ष में आयोजित होने वाले तमाम काव्य समारोहों में यह समारोह अपनी विशिष्टता के कारण अपना विशेष स्थान रखता है। देश के हर शिक्षण संस्थान को इस आयोजन से प्रेरणा लेकर अपने संस्थान में काव्य के रचनात्मक उत्सव के द्वारा मां हिंदी और संस्कारों के प्रति अपने छात्रों को प्रेरित और प्रोत्साहित करना चाहिए। यह समारोह अपने नवाचार और हिंदी के प्रति छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए एक विशिष्ट भूमिका निभा रहा है। भाई कैलाश नाथ बंसल जी, दिनेश गुप्ता जी सहित समस्त रामजस परिवार को इस समारोह के आयोजन के लिए अनंत शुभकामनाएं।

डिजिटल साहित्य २४ पत्रिका-डिजिटल संस्करण-मीडिया पंचायत न्यूज पोर्टल दिल्ली कार्यालय २४ आदर्श गली, पालमगाँव नई दिल्ली, प्रथम तल ११००४५

नोट- उपर्युक्त ई पेपर को अवैध रूप से छपवाना कानूनन अपराध है।